प्रागैतिहासिक कला में प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 16.06.2021

कु0 रीना
शोधार्थिनी,
ललित कला विभाग,
मेरठ कॉलिज, मेरठ
ईमेलः renubrt86@gmail.com

सारांश

कला के विशाल एवं अतलदर्शी इतिहास में सम्पूर्ण सृष्टि को सौन्दर्यात्मक रूप प्रदान किया है। जहाँ मनुष्य ने अपने अनुरूप आवास सम्बन्धी सुख–सुविधाओं को इक्ट्ठा किया और साथ ही उसकी कलात्मक प्रवृत्ति भी उजागर होने लगी। परिणामस्वरूप धर्म से प्रेरित आदिम मानव ने पदार्थों तथा पृथ्वी, आसमान, पर्वत, ग्रह नक्षत्र आदि को आध्यात्मिक नजर से देखा और अपनी कल्पना शक्ति के अनुसार सम्पूर्ण अज्ञात शक्तियों को साकार रूप देकर अपनी कला में अंकित किया है। मानव के कला सृजन के कुछ उद्देश्य थे। धार्मिक, सामाजिक जीवन के अनुष्ठानों, रीति–रिवाजों, संस्कारों, मनोरंजन, उत्सव, वेशभूषा आदि से रहा था।

प्रस्तावना

मानव की संवेदनशीलता को जाग्रत करना कला का धर्म है और कला का आरम्भ सीधे मानव जीवन से होता है तथा वह अधिक तीव्र होकर हमें स्पन्दित करती है। कला के द्वारा जिन रूपों को निर्मित किया जाता है वह लम्बे समय के पश्चात संस्कृति के इतिहास के पृष्ठ बन जाते हैं। मानव द्वारा निर्मित आदिम रूप संस्कृति की विकासशील परम्परा की मौलिकता को प्रस्तुत करते हैं। अतः संसार की सभी प्रागैतिहासिक कलाएँ मनुष्य के सभ्य होने से पहले की है और वास्तविकता यह भी है ''कि मानव में चित्रण की प्रवृत्ति उस काल से की है जब वह जंगलों में रहता था।''[1]

रेखाचित्र सं0–1

भारतवर्ष के प्रागैतिहासिक शिला–चित्रों की खोज विदेशी विद्वानों 'जॉन काकर्बन' तथा 'आर्चिवल्ड कार्लाइल' द्वारा की गयी है। इन्होंने मिर्जापर स्थित पहाड़ियों में घोडमंगर नामक स्थल पर सन् 1880 ई0 में मानवाकृत्तियों का चित्रण देखा ये आकृत्तियाँ शिकार विषय पर आधारित रही है। 'जॉन काकर्बन' ने विजयगढ़ दुर्ग के निकट 'गैंडे के शिकार' चित्र में छः व्यक्तियों को गैंडे पर भालों से वार करते हुए दृश्यचित्र को देखा। (रेखाचित्र सं0–1)

करियाकुण्ड, सरहट तथा करपाटिया ग्रामीण क्षेत्रों के निकट सन् 1907 ई0 में 'ए0 सिल्वेराड' ने शिला चित्रों की खोज की गयी। यहाँ अंकित चित्रों में पैदल चलते घुड़सवारों तथा बिना पहिए की बैलगाड़ी की कलाकृत्तियों का चित्रण किया गया है। प्रागैतिहासिक चित्रों के अवशेष उपत्यकत, नर्मदा, मध्य प्रदेश, छोटा नागपुर, पंजाब, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, होशंगाबाद, उड़ीसा आदि क्षेत्रों से मिले हैं। आदिम मानव द्वारा अंकित चित्राकृत्तियों के आधार पर उस काल के समस्त सुक्ष्म व्यापारों का ज्ञान मिलता है। इन कृत्तियों से उस समय के मानव की संस्कृति धारणा, सामाजिक पृष्ठभूमि तथा उसकी हिंसक प्रवृत्ति आदि के मूलभूत तत्वों का बोध होता है। ''भयंकर पशुओं का शिकार करते हुए'', ''ढ़ोल तथा मृदंग बजाते हुए।'' (रेखाचित्र सं0–02)

रेखाचित्र सं0–2

देवीय आकृत्तियों व अन्य दैनिक घटनाओं चित्रों को प्रागैतिहासिक कालीन मानव कन्दराओं की बड़ी दीवारों पर चित्रांकित किया गया। इन चित्राकृतियों में पशु–पक्षी व 'नारी पुरुष' आदि समस्त आकृत्तियों को सम्मिलित किया गया है।''[2]

प्रागैतिहासिक चित्राकृत्तियों के बारे में एल0 एडम ने कहा है ''कि इन चित्रों की शैली आदिम युग तथा यथार्थपूर्ण रही है। प्रागैतिहासिक चित्रकला की सीमाएँ विस्तृत है और उनमें अनावश्यक तत्त्वों का समावेश कहीं भी देखने को नहीं मिलता है।''[3] पाषाणकाल के मानव को इन्हीं गुफा–ग्रहों में आदिम सभ्यता के सर्वाधिक चिन्ह समय की मार को सहन करते हुए आज हजारों वर्षों के पश्चात भी आधुनिक मानव के सम्मुख जीवित खड़े हुए हैं।

भारत में भीम बेढ़का की 275 गुफाओं से बहुतायत चित्र मिले हैं। इन चित्राकृत्तियों में मुख्य रूप से सामूहिक नृत्य, मद्यपान, शिकार करते हुए मानव, माँ व शिशु तथा जुलूस व घोड़ों आदि के चित्रों को भी रेखांकित किया जाने लगा था। लगभग ढ़ाई–तीन हजार चित्राकृत्तियों का चित्रांकन गुफाओं की दिवारों पर किया गया है। लिखुनिया–1 गुफा में अंकित नृत्यवादन, पशुओं, आखेट सम्बन्धी दृश्य आदिम मानव के सौन्दर्यबोध को प्रकट करते हैं। लिखुनियाँ–2 से प्राप्त 'माँ और

शिशु' की चित्राकृति में सरल रेखाओं के माध्यम से भावों का कलामय चित्रांकन हुआ है तथा एक उत्कृष्ट चित्र 'हाथी के शिकार' का भी मिला है। यही सोरोघाट स्थल में चित्रांकित कृत्तियों में मानवाकृत्तियाँ व शाही शिकार के दृश्यों के चित्रांकन भी उपलब्ध होते हैं। कोहबर शिलाश्रय में निर्मित दो खण्डेदार आदिम मानव दृश्य बहुत महत्वपूर्ण रहा है। 'सशस्त्र खड़ा एक आखेटक शिकार के लिए जा रहा है।' चित्र विजयगढ़ के निकट शिलाश्रय से प्राप्त हुआ है। दृश्य में चालक आखेटक की आकृति आदिम मानव के द्वारा चित्रित की गयी है। यही लोहरी नामक स्थल की एक दरी (गुफा) पर एक पुरुष को जलती हुई मशाल लिए बाध का सामना करते चित्रांकित किया है। इस दृश्य में छः मानवाकृत्तियाँ भालों से गैंडे का शिकार कर रही है। सातवीं मानवाकृत्ति जमीन पर आहत पड़ी हुई है। दृश्य में गति का उत्तम प्रदर्शन प्रस्तुत किया गया है।

रेखाचित्र सं0–3

बाँदा जनपद के सरहट नामक स्थान के समीप दरी (गुफा) से एक चित्र प्राप्त हुआ है। जिसमें बिना पहिए की छकड़ा गाड़ी में एक–चालक की भाँति आकृति गाड़ी में जुड़े बैल को हाँक रही है। चालक की संरचना में एक विशेष व्यक्ति की आकृति का चित्रण है। पीछे बैठे दो पुरुषों में से एक पुरुष उसके लिए छत्र पकड़े है। दो सशस्त्र पुरुष गाड़ी के पीछे की ओर चल रहे हैं। आकृत्तियों की मुद्रा तथा वेशभूषा दोनों से ही कृषि सभ्यता की विकसित अवस्था का बोध होता है। (रेखाचित्र सं0–03)

रेखाचित्र सं0–4

मानिकपुर (बाँदा जनपद) से प्राप्त एक समूह अंकन में बाहरी रेखानुकृति से दृश्य अंकित किया गया है। दृश्य में दण्डधारी अश्वरोहियों को लगाम पकड़कर पैदल चलते हुए चित्रित किया गया है। (रेखाचित्र सं0–4)

प्रागैतिहासिक चित्राकृत्तियों के दृष्टिपात से मध्यप्रदेश एक विशेष केन्द्र रहा है। जहाँ चम्बल तटिनी की घाटियों, अम्बिकापुर, पंचमढ़ी, सागर, सिंघनपुर, नरसिंहगढ़, रायसेन, सोरोघाट,

भोपाल, होशंगाबाद आदि क्षेत्रों से प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्रपद्धति, विविधता के कारण अपना विशेष स्थान रखते हैं। यहाँ भैंसे के शिकार सम्बन्धी विभिन्न चित्राकृति प्राप्त हुई है। रायगढ़ के सिंघनपुर से मिली एक चित्राकृति में विस्तृत रूप में 'भैंसे का शिकार करते हुए शिकारियों के एक समूह' का चित्रांकन किया गया है। एक अन्य चित्राकृति में शिकारियों ने बर्छी–भालों के आक्रमण से घायल कर दिया है। भैसा जीवन की अन्तिम साँसे ले रहा है। अतः शिकारी आनन्दित मुद्रा में उसे घेरे खड़े हुए है। 'हाथी पर सवार शिकारी भैंसे का शिकार' चित्र पंचमढ़ी क्षेत्र की पाण्डव गुफाओं में चित्रित हुआ है। एक पारिवारिक चित्राकृति में 'दो पुत्रों के साथ माता' का चित्रण है। अर्द्धवस्त्र पहने नारी वस्त्राभूषणों से सजायी गयी है। बालों का जुड़ा बना है तथा हाथ में थैली के समान आकृति वाली वस्तु पकड़े हुए हैं। उसके समान कटि तक आकृति वाली एक पुरुषाकृति बनी है। यही पर नृत्य की मुद्रा में एक नारी आकृति दोनों हाथों को ऊपर उठाये हैं। गले में पट्टे के माध्यम से लटकती ढोलक चित्रांकित है।

रेखाचित्र सं0–5

सिंह आखेट का दृश्य भाड़ोदव की छत पर चित्रित किया गया है। यहाँ पर 'योद्धाओं' तथा 'धनुर्धर' की चित्राकृति भी मिली है। बनियाबेरी से दो चित्र 'स्वास्तिक पूजा' के मिले हैं। इसके अलावा 'क्रीड़ा नर्तक' के विभिन्न आलेखन भी चित्रित किये गये हैं। इस गुफा में पूरक शैली में बना चित्र एक योद्धा को अस्त्र–शस्त्र उतारकर आराम करते हुए अंकित है। यह मटमैले व सफेद रंगों में बना है। उसने बकरे की भाँति मुखौटा पहना है तथा कमर पर मेखला बंधी हुई है। वह एक हाथ सिर के नीचे रखे करवट से लेटा हुआ है। (रेखाचित्र सं0–5)

रेखाचित्र सं0–6

मेन्टोरोजा में पारिवारिक जीवन सम्बन्धी एक दृश्य में एक स्त्री के पीछे पालतु कुत्ता चल रहा है। जिसकी डोर उस नारी ने पकड़ी हुई है। नारी के सिर पर रखी टोकरी में कुछ फल हैं। उसके योद्धा पति की आकृति लम्बी चित्रित की गयी है। उसने एक हाथ में धनुष तथा दूसरे हाथ में बाण पकड़े हुए हैं। कमर में बंधी मेखला में उसने कुल्हाड़ी लगायी हुई है तथा संभवतः किसी

तिकोनी वस्तु में बाण रखे हुए हैं। यहीं पर बनी एक अन्य उत्कृष्ट चित्राकृत्ति में एक नारी कमर पर हाथ रखे खड़ी हैं। कलाकृति में नीचे की ओर बाड़ा बनाया गया है। जिसके नीचे एक पशु बैठा है। उसके नीचे दो पशु आकृतियाँ खड़ी दिखायी गयी है। (रेखाचित्र सं0–6)

जम्बूद्वीप पंचमढ़ी शिलाओं पर बनी 'दो योद्धा' कलाकृति में एक सुसज्जित तथा अलंकरत आकृति के साथ प्रदर्शित है। अलंकरत आकृति नृत्य की मुद्रा में दिखाई दे रही है। पुरुषाकृत्तियाँ एक हाथ में धनुष तथा दूसरे में बाण लिए हुए है। सिर के बालों को छोटी–छोटी रेखाओं के माध्यम से दिखाया गया है।

रेखाचित्र सं0–7

'धनुर्धर द्वारा अपहरण का दृश्य' चित्र में धनुर्धर वीर पुरुष एक स्त्री का हाथ पकड़कर उसे ले जा रहा है। स्त्री पुरुष दोनों की आँखों में बिन्दु चित्रांकित किया गया है। (रेखाचित्र सं0–7)

'मुक्तकेशी नारी व पुरुष' कृत्ति में पुरुष दोनों हाथ फैलाये खड़ा है। नीचे की ओर चित्रित मुक्तकेशी स्त्री ने पुरुष का एक पैर पकड़ रखा है। दोनों की गर्दन लम्बी है। एक रेखाचित्र कामातुर 'स्त्री पुरुष' युग्म का प्राप्त हुआ है। महादेव गुफा में चित्रांकित 'केश विन्यास करती मानवाकृत्तियाँ' पारिवारिक दृश्य में वृत्ताकार बाड़े के भीतर बैठी दो स्त्रियों में एक स्त्री की गोद में शिशु है। साथ ही वह स्त्री दूसरी स्त्री के बालों को संवार रही है। एक अन्य चित्र में चार स्त्रियाँ वृत्ताकार बैठी हुई भोजन पका रही है। तीन स्त्रियों ने हाथों में लकड़ियाँ पकड़ी हुई हैं। निकट ही एक स्त्री युग्म का चित्रण भी किया गया है जिसमें पुरुषाकृति कंधे पर रखे बांस के छोरों पर कोई वस्तु बाँधकर ला रहा है। (रेखाचित्र सं0–8)

रेखाचित्र सं0–8

पंचमढ़ी (निम्बूभोज शिलाश्रय) से प्राप्त एक चित्राकृति में एक आकृति विशेष प्रकार का तन्तु वाद्य बजा रही है। निकट ही धरती पर अर्द्धलेटी मुद्रा में बैठी दूसरी स्त्री मंत्रमुग्ध संगीत का आनन्द ले रही है। एक अन्य चित्र 'आसनस्थ' होने की पूर्वावस्था' चित्र में मण्डप के नीचे बैठे दम्पत्ति प्रेमलाप कर रहे हैं। स्त्री के ऊपर चन्द्र का चित्रण प्रतीक रूप में किया गया है।

रेखाचित्र सं0–9

यहाँ चित्रित एक अन्य दृश्य में 'महिषासुर' तथा 'अश्वारूढ़' दलों में युद्ध में समस्त मानव आकृत्तियों के हाथों में भाले या तलवार के समान अस्त्र दिखाये गये हैं। उन्होंने मेखला बाँधे हुए हैं। चित्राकृत्ति में विभिन्न अश्वों का चित्रांकन भी किया गया है। (रेखाचित्र सं0–9)

होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) से लगभग 2500 किमी0 दूर आदमगढ़ में बलुआ पत्थरों की चट्टानों पर भावनाओं की अभिव्यक्ति संकेतों के सहारे की गयी है। अतः यहाँ पर हल्के पीले वर्ण में दोहरी रेखाओं से विशाल भैंसे तथा हाथी की एक विशाल चित्रांकित पत्थर के ऊपरी हिस्से में जिराफ समूह चित्रित है। जिराफ समूह हाथी के सामने अगले हिस्से में निर्मित है। नीचे वाले भाग पर अनेक शैलियों के अस्त्रधारी अश्वारोही चित्रांति है। हाथियों के समूह के सम्मुख एक महिष नीचे दाँयी तरफ चार धनुर्धारी चित्रित किये गये हैं।

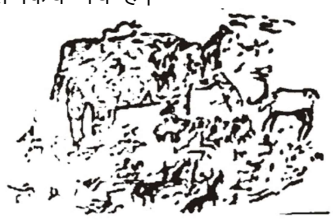

रेखाचित्र सं0–10

एक चित्राकृति 'शस्त्रधारी मानवाकृत्ति' में शिकारी कटिबन्ध धारण किये चित्रित है। उसके बाल खुले हुए हैं साथ ही हाथ में हथियार लिए वह युद्ध के लिए तत्पर दिखाई पड़ रहा है। एक अन्य कृति 'चतुर अश्वारोही' चित्राकृति में सवार जनसमूह बिना काठी वाले घोड़े पर चित्रित है। कृति के आगे वाले भाग में दो घोड़े आगे–पीछे चल रहे हैं। पीछे वाला घोड़ा आगे घोड़े पर बैठे सवार की लुंगी खींचकर उसे गिराने की कोशिश कर रहा है। इसीलिए पीछे वाला सवार आगे बढ़ने में कठिनाई महसूस कर रहा है। सवार के एक हाथ में डण्डा है। तथा पीछे की ओर गठरी बंधी हुई है। सबसे पीछे हाथ में तलवार पकड़े व्यक्तियों का दल जंगली व उनके सवार भी चित्रांकित किये गये हैं। (रेखाचित्र सं0–10)

मध्यप्रदेश के भोपाल क्षेत्र से लगभग 40 किमी0 दूर ''भीमबैठका की प्राकृतिक दरियों में प्रागैतिहासिक चित्रांकित पत्थरों का प्राकृतिक संग्रहालय प्रतीत होता है ''भीमबैठका की गुफाओं में रहस्य लेख''[4] के उपरान्त यह जानकारी मिली कि यहाँ दस किमी0 के क्षेत्र में फैली 600 से ज्यादा दरिया है। जिनमें 275 चित्राकृति है। इनमें अनेक प्रकार के पशुओ जल–जन्तुओं, नृत्य, आखेट एवं

सामूहिक जीवन का चित्रण किया गया है। ''यह केन्द्र मानव द्वारा प्रमुख केन्द्र या राजधानी के रूप में माना गया होगा।

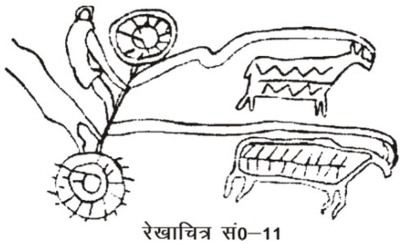

रेखाचित्र सं0–11

यहाँ खेतिहर व शिकारी आदिम जीवन के एक सम्पूर्ण दृश्य का अवलोकन 600 गुफाओं में बिखरी अनोखी सामग्री के माध्यम''[5] से हुआ है। चम्बल तटिनी घाटी के रामपुरा–मानपुरा रोड़ पर मोरी गाँव के चारों तरफ से भी लगभग 30 शिलाश्रयों के व्यापक दल ने अनेक प्रकार के निर्मित चित्राकृति प्राप्त हुई है। सीतामढ़ी तथा छिबड़ा से मिले विभिन्न चित्रों में प्रतीक, आलेखन तथा क्षेपांकन दृष्टव्य है। ''इण्डियन आर्कियालॉजी चम्बल घाटी क्षेत्र के चिब्बनानाला पत्थर पर चित्रित कलाकृति में युद्ध के माध्य घटित नाटकीय परिवेश का उत्तम अंकन है। यहाँ पर चित्रांकित 'आक्रमणकारी तथा भयभीत गाड़ीवान' चित्राकृति में दो पशुओं से जुड़ी गाड़ी के सामने की ओर से दो आक्रमणकारी हाथ में धनुष लिए आ रहे हैं। गाड़ी के पीछे की तरफ भययुक्त गाड़ी वाले की शत्रुओं को सामने देखकर तेज गति से भागते हुए प्रदर्शित किया है। इस स्थल से उपलब्ध ब्राही अभिलेख 'दबूकेन करितम' से आभास होता है। भोपाल क्षेत्र के धरमपुरी पत्थर पर गहरे कत्थई वर्ण से चित्रांकित पहियो व धूरी से युक्त गाड़ी की चित्राकृति मिली है। तथा चालक धुरी के पीछे की ओर से पकड़कर उसे चला रहा है। नीचे वाले पहिए के निकट एक अर्द्ध आकृति का चित्रांकन भी देखने को मिलता है। (रेखाचित्र सं0–11)

दक्षिण भारत के बैलारी क्षेत्र के बसावनगुड़ी तथा कप्पुगुल्लू के उत्तम तथा कर्षण चित्र, शिलचित्र मिले हैं। कप्पुगुल्लू से गांडेन ने आरोही नर्तक, विभिन्न पशु–पक्षी तथा नारी–पुरुष युग्म की चित्राकृति प्रकाश में आयी है।

मानव सभ्यता धीरे–धीरे बदलती गयी 4,000 से 3000 ई0पू0 चित्रित सभ्यता को पुरातत्ववेत्ताओं तथा इतिहासकारों ने 'मृत पात्रों की सभ्यता' नाम से भी जाना जाता है। ''इस सभ्यता की कलामय सामग्री उप्पा, बर्तन, जवाहरात, आभूषण मुद्राएँ और मूर्तियाँ आदि वस्तुएँ उपलब्ध हैं।''[6] मानव आकृति के विभिन्न खिलौनों को मृणमूर्तियाँ कहा जाता है। ये सिन्धु सभ्यता के सभी स्थलों से प्राप्त हुई है। सिन्धु सभ्यता की मोहरों पर पुरुषों के सिर पर सींग निर्मित है। साथ ही मुख–मण्डल के भाव में भयानकता दृष्टव्य हैं। यहाँ पर खुदाई में छोटी–छोटी बोनी आकृत्तियाँ भी मिली है।

मोहनजोदड़ों से उपलब्ध एक मुद्रा में पीपल के पेड़ के मध्य वृक्षदेवी का चित्रण हुआ है। एक अन्य चित्राकृति में वृक्ष देवता को बलि देने के दृश्य में एक कतार में छः नग्न पुरुष तथा एक झुकी हुई आकृति चित्रित की गयी है।

हड़प्पा मोहनजोदड़ो व चन्दहुदड़ों से बहुतायत मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। जो सामान्य शैली में बनायी गयी है। परन्तु इनका विशेष महत्व इस दृष्टिपात से अधिक है कि भविष्य में यह परम्परा उत्तम शैलियों का उद्‌भव करने वाली बनी काल की गति के साथ–साथ ये शैलियाँ इतनी ज्यादा परिपक्व हो गयी कि दर्शक इन्हें देखकर आश्चर्य पूर्ण हो गये हैं।

वर्तमान भारत में भी धरती के गर्भ में उल्लेखनीय कला धरोहर का खजाना छिपा हुआ है। जो समय–समय पर प्रकाश में आकर संस्कृति तथा पुरातत्व आदि अनेक महत्वपूर्ण विषयों का बोध कराने की सर्वाधिक संभावनाएँ प्रस्तुत करता रहा है। इसके अलावा प्रागैतिहासिक चित्राकृति मानव के सांस्कृतिक इतिहास की नजर से भी अनमोल है। विश्व के इतिहास की मजबूत जड़ प्रागैतिहासिक कला को माना जाता है। प्रागैतिहासिक कला अपने विशाल प्रसार को समेटे हुए संसार की संस्कृत्तियों का साक्षात्कार कराती है। अतः मानव समाज का चित्रकला से बहुत प्राचीन परिचय रहा है। आदिम मानव से आज तक के सभ्य मनुष्य तक मानव विभिन्न प्रकार से अपने उजागर तथा छिपो मनोविकारों को चित्रांकित करता आया है जो कि उल्लेखनीय रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. दास रायकृष्ण, *भारत की चित्रकला इलाहाबाद,* भारती भण्डार लींड प्रैस छठा–संस्करण, 1974, पृ0 **02**
2. जैन, डॉ0 जिनदास, *भारतीय चित्रकला का आलोचनात्मक अध्ययन,* राजहंस प्रकाशन मन्दिर, मेरठ तृतीय संस्करण, 1971, पृ0सं0–**5, 6, 25**
3. एल0एडम0 प्रिमिटिव आर्ट, पृ0सं0–**75**
4. मिश्र, डॉ0 वीरेन्द्रनाथ, धर्मयुग 30 सितम्बर 1973 ई0 भीम बैठका की गुफाओं का रहस्य (लेख)।
5. अग्रवाल डॉ0 आर0ए0 कला विलास, भारतीय चित्रकला का विवेचन, प्रकासक इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ, 2002, पृ0सं0–**13, 14**
6. जैन, डॉ0 जिनदास, भारतीय चित्रकला का आलोचनात्मक अध्ययन, राजहंस प्रकाशन मन्दिर मेरठ, तृतीय संस्करण 1971, पृ0सं0–**10**
7. वर्मा, श्री रवि, स्वतन्त्र भारतीय 28 जनवरी 1990, 'मिर्जापुर के थिरकते शैलचित्र'